वाचक भावविजयकृत

श्री अंतरीक (अन्तरिक्ष) पार्श्वनाथ छन्द

(सं.) डो. रसीला कडीआ

ला.द.भा.सं. विद्यामन्दिर, अमदावादना ग्रन्थभण्डारनी (नं. ३०२३६) ४ पृष्ठनी प्रत परथी प्रस्तुत नकल करवामां आवी छे. प्रतनी स्थिति श्रेष्ठ छे अने तेमां चित्र पत्रांक आपेला छे. हांसियो बन्ने बाजुअे छे. छेवाडे बे अने हांसियानी शरुआतमां ऊभी त्रण लीटीओ दोरेली छे. आंकणी अने अंक पर गेरु भूंस्यो छे. प्रारंभे भले मींडुं अने अंते समाप्तिसूचक वाक्य छे.

कृतिनो वर्ण्यविषय अन्तरिक्ष पार्श्वनाथजीनुं महिमागान छे. दूहा, अडियल्ल, चालि, देशनामोनो वर्णवतो छन्द, छप्पय, आर्या, गाहा एम विविध छन्दोमां आ कलियुगमां पण जागता-हाजराहजूर एवा प्रभु श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथना विघ्न, रोग, शोक, संकटनिवारक स्वरूपने वर्णवेल छे. धरतीथी सदा अद्धर रहेती एवी मूर्तिने प्रणमी पुरुषादाणीय पार्श्वनाथना बिम्ब तथा फणानुं कवि झडझमकयुक्त वर्णन करे छे वाचकना मनने मोही ले छे. चारणी साहित्यनी झाडझमकनी असर अहीं वरताय छे. पार्श्वनाथ प्रभुनी प्रतिमानुं रूपवर्णन खूब सुन्दर छे. अन्त्यानुप्रास अने प्राससांकळीथी निर्मित आ कृति श्रवणमधुर बनी छे. अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ प्रभुनो महिमा देशभरमां तो खरो ज पण विदेशे-अरबस्तान, सिलोन, इराक, अफघानिस्तान, बलुचिस्तान, चीनमां पण एटलो ज छे तेवी कविनी वात, प्रभुना महिमासूचक छे. कडी २५ थी कडी ३१ सुधीनां स्थळनामोनो एक जुदो अभ्यास भौगोलिक सन्दर्भने ध्यानमां राखीने करवा जेवो खरो.

कृतिमांना अंकने में सुधारी सळंग नंबर आप्या छे. कृतिमां ११ नंबर अपायेल नथी. १५ नंबर बे वार अपायो छे पण एने सुधारीने अहीं मूक्या छे. ष नो ज्यां ख ना अर्थमां छे त्यां ख करीने ज मूक्यो छे.

अन्ते कवि पोतानी गुरुपरम्परा (विजय देवगुरु-विजय प्रभसूरि) आपी पोतानुं नाम (भावविजय वाचक) आपे छे. उपरांत प्रस्तुत कृतिनो समय पण आपे छे. वि.सं. १७५० मागशर वद १४ना रोज कृति रचाई छे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने ते पाटणमां पं. भाग्यविजयगणि, सकल मुनिमण्डली तथा मुख्य मुनि श्री प्रेमविजयना वाचनार्थे रचाई होवानुं जणाव्युं छे. आम, समय, रचना स्थल, रचनाकार तथा रचनाना हेतुनी विगतो साथेनी आ कृति अन्तरिक्ष पार्श्वनाथनां पद्योमां तथा ऐतिहासिक दृष्टिअे महत्त्वनी छे.

श्री अंतरीक (अन्तरिक्ष) पार्श्वनाथ छन्द

दूहा

सरसती मात माया करी, आपो अविचल वाणि
पुरिसादाणी पास जिण, गाउं गुण मणि खांणि ॥१॥

अदभुत कौतिक कलियुगें, दीसे एह अदंभ
धरथी अधर रहे सदा, अंतरीक थिर थंभ ॥२॥

महिमा महि मंडल सबल, दीपे अनुपम आज
अवर देह(व) सूता सवे, जागे तूं जिनराज ॥३॥

एक जीभ करि किम कहुं, गुण अनंत भगवंत
कोडि जीभ करि को कहे, तोहे न आवे अंत ॥४॥

तूं माता तूं हि ज पिता, त्राता तूंहि ज बंधू
मन धरि मुझ उपरि करें, करुणा करुणासिंधु ॥५॥

छंद अडयल्ल

करि करुणा करुणा रस सागर, चरण कमल प्रणमें नित नागर
निरमल गुण मणि गण वयरागर, सुरगुरु अधिक अछे मति आगर ॥६॥

कामकुंभ जिम कामितदायक, पद प्रणमें सुरवरनर नायक
मथित सदुर्मय मनमथसायक, अष्ट कर्म रिपुदल घायक ॥७॥

नवनिधि रिद्धिसिद्धि तुझ नामें, मनवंछित सुख संतति पामे
जे प्रभु पद पंकज सिर नामें, बहुला सुरमहिला तस कामें ॥८॥

बहुल वसे विवहारी व्रातं, वर सिरिपुर वसुधा विख्यातं
जिहां राजे जिनवर जग तातं, अंतरीक अनुपम अवदातं ॥९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद चालि

अवदात जेहनो जगत्र जाणे गुण वखाणे सुरधणी
परसाद प्रभुनें प्रगट परभव पामिओ प्रभुपदफणी
महिमा वधारे विघन वारे करे सेवा अति घणी
तुम्ह नांम लीनो रहे भीनो अवर देवह अवगणी ॥१०॥

नर नाथ कोडि हाथ जोडि, मान जोडि इम कहे
प्रभु नाथ चरणे जिके सरणे रहे ते परपद लहे
अति जेह उतकट विकट संकट निकट नावे ते वली
भय आठ मोटा निपट खोटा दूरथी जाइं टली ॥११॥

छंद चालि

जे रोग भयंकर दुष्ट भगंदर कुष्ट खय नख सखालि
हरखा अंतर्गल वलि अमल ज्वर विषमज्वर जाइं तास
दीसे अति माठा वलि व्रण चाठा नाठा जाइं तेह
तुम दरिसण सामी शिवगति गामी चामीकर सम देह ॥१२॥

जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे वज्जे वायु कुवाय
थरहर तिहां धुज्जे हरिहर पुज्जे किज्जे बहुल उपाय
मनमांहि कंपे हइहइ जंपे कुणहि किंपि न थाय
इणें अवसर भावे प्रभुने ध्यावे पावे ते सुख थाय ॥१३॥

झडफे तरुडाला पांनका जाला काला धूम कलोल
उच्च लता देखी जाय उवेखी पंखी पडय दंदोल
पंखी जन नासे भरीआ सासे त्रासे धूजे तेह
पंडिआ तिण ठामे प्रभुने नामें कुसलें पामें गेह ॥१४॥

फणनें आटोपे मणिधर कोपे लोपे जे वलि लीह
धसमसतो आवे देखी धावे लबकावे दो जीह
बीहे जन जातां देखी रातां लोअण तस विकराल
कीधे गुणगानें प्रभुनें ध्याने अहि थाइं विसराल ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पापें पग भ[र]ता हींडे फिरता करता अति उनमाद
घोटक जिम छूटे अतिआ कूटे लूंटे निपट निषाद
वनमां जे पडिआ चोरें नडिआ अडवडियां आधार
इणि अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥१६॥

छंद

मदमत्त मयगल अतुल बल धर जास दरिसण भज्जअे
केसरिअ सींह अबीह अतीहें मेह सम वड गज्जअे
विकराल काया(ल) कराल कोपें सींहनाद विमुक्कअे
सुखधाम प्रभु तुम नाम लेतां तेह सींह न ढुक्कअे ॥१७॥

गललाट करतो मद झरतो कोप धरतो धांवअे
भर रोस रातो अधिक मातो अति कुजातो आवए
घर हाट फोडे बंधु त्रोडे मान मोडे नृप तणुं
तुम्ह नाम ते गज अजा थाइं वसे आवे अति घणुं ॥१८॥

रणमाहिं सूरा भडें पूरा लोह चूरा चूरए
गज कुंभ भेदे सीस छेदे वहेलो हित पूरअे
दल देखि कंपे दीन जंपे करय प्रबल पुकारअे
तुम्ह स्वामि नामें तिणें ठामें वरे जय जयकारअे ॥१९॥

भय आठ मोटा निपट खोटा जेम रोटा चूरिए
अश्वसेन धोटा तुम प्रसादे मन मनोरथ पूरिए
महिमाहि महिमा वधे दिन दिन चंद ने सूरिज समो
जस जाप जपता ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते नमो ॥२०॥

छंद अडयल्ल

छाया पडल जाल सवि कापे, आंखे अधिक तेज वलि आपे
पन्नगपति प्रभुने परतापें, अविचल राज काज थिर थापे ॥२१॥

पदमावति परतो बहु पूरे, प्रभु प्रसाद संकट सवि चूरे
अलबत्त अलंगी जाइं दूरें, लखमी घर आवे भर पूरे ॥२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिमंडल मोटो तूं देवह, चौसठ इन्द्र करे तुझ सेवह
त्रिभुवन ताहरुं तेज विराजे, जस परताप जगत्रमें गाजे ॥२३॥

केता देस कहुं वलि नामें, प्रभुनी कीरति जिण जिण ठामे
पुर पट्टण संवाहण गामे, सुणतां नाम भविक सुख पामे ॥२४॥

छंद देसनाम

अंग वंग कलिंग मरुधर मालवो मरहट्ट अे
कास्मीर हूण हमीर हब्बस सवालख सोरट्ठ ए
कामरूअ कूंकण दमण देसें जपे तोरो जाप ए
इणि देस अविचल प्रबल प्रतपे पास प्रगट प्रताप ए ॥२५॥

लाट ने कर्णाट कन्नड मेदपाट मेवात ए
वलि नाट धाट वेराट वागड वच्छ कच्छ कुशात ए
सतिलंग गंग फिरंग देसें जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥२६॥

वलि ओड तोड सगोड द्राविड चउड नट महाभोट ए
पंचाल ने बंगाल बंगस सबर बब्बरकोट ए
मुलतान मागध मगध देसें जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥२७॥

नमि आड लाड कुणाल कोसल बहुलि जंगल जाणिइं
खुरसाण रोणअ इराक आरबं तुस(रु)क वार्त्त वखाणिइं
कुरु अच्छ मच्छ विदेह देसे जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥२८॥

कासीअ केरल अने केकइ सूरसेन-संडिब्भअे
गांधार गुर्जर गाजणें वडिआर गूड विदर्भअे
आभीर ने सौवीर देसें जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥२९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेपाल नाहल अमल कुंतल अजल कज्जल देस ए
प्रतकाल चिल्लल मलय सिंहल सिंधु देस विसेस अे
खसखान चीन सिलाण देसें जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥३०॥

कणवीर कानड कुलख काबिल बुलख भंग विभंग ए
मलिआर मधु हल्लार हिरम जपय गुहिं गुलबंग ए
वलि वसाण दुसाण देसें जपे तोरो जाप ए
इणि० ॥३१॥

छंद छप्पय

प्रतपे प्रबल प्रताप ताप संताप निवारण
दस दिसि देस विदेस भमति भविजन सुखकारण
रोग सोग सवि टले मिले मनवंछित भोगह
दोहग दुक्ख दरिद्र दूर सवि टलें वियोगह
स्वर्ग मृत्यु पातालमें त्रिहुं भवने प्रगट्यो सदा
पार्श्वनाथ प्रताप तुझ आपे अविचल संपदा ॥३२॥

छंद चालि

अविचल पद आपे थिर करी थापे जगव्यापक जिनराज
उपद्रव सवि जाइं सुर गुण गाइं वसि थाइं नरराज
दीपे परद्वीपे रिपुनें जीपे दीपे जिम दिनराज
पद पंकज पूजे प्रभुना रीझे सीझें वंछित काज ॥३३॥

तुं छे मुज नायक हुं तुज पायक लायक तुज्झ समान
कुण छे जग माहें साहि बाहे राखे आप समान
तूंहि ज ते दीसे विस्वावीसे हीयडुं हींसे हेव
देखुं हुं नयणे जंपू वयणे निरमल तुम्ह गुण देव ॥३४॥

सिंधुर सुंडाला मद मतवाला दुंदाला दरबार
झूले मनि गमता रंगे रमता उच्चा लता वार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरकीत जाला आगल पाला झूझाला तरवार
झालीने दोडे होडाहोंडे जोडे बहु परिवार ॥३५॥

हयवर पाखरिआ रथ जोतरिआ घुघरीना धमकार
सोवन चीतरिआ नेजा धरिआ परवरिआ असवार
गज बेठा चाले रिपु मनि साले माले लिखमी सार
एहवी ऋध पामे प्रभुने नामे सफल करे अवतार ॥३६॥

आर्या

अवतार सार संसार माहिं, तेह जननो जाणिइं
धन कमाइ धरम थानिक, जिणे लखमी माणिइं ॥३७॥

दूहा

सुंदर रूप सुहामणुं, श्रवण सुणी नरनारि
कोडि कर जोडि रहे, दरिसणने दरबारि ॥३८॥

छंद अर्धनाराच-रूपवर्णनम्

प्रियंगु वन्न नील तन्न देखि मन्न मोहअे
सनूर सूर नूर थें अधिक्क जोति सोहअे
अमंद चंद वृंद थें कला कलाप दीप्पअे
सुरेन्द्र कोटि कोटि थें जिणंद जोर जिप्पअे ॥३९॥

अभूल फूलबान के कबान तो न लग्गअे
दुजोध क्रोध योध वैरि मान छोडि भग्गअे
अदीन तूं सुदीन बंधु देहि मुक्ख मग्गअे
शरण्य जानि स्वामि के चरण कुं बिलग्गअे ॥४०॥

सज्योति मोति योति थें सुदंत पंति दीप्पअे
गुलाल लाल ओष्ट थें प्रवाल माल छिप्पअे
सुवास खास वास थें कपूर पूर भज्जअे
प्रलंब लंब बाहु थें मृणाल नाल लज्जअे ॥४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनूप रूप देखते जिणंद चंद पासए
पदारविंद वंदतें कुपाप व्याप नासअे
दरिद्द पूर चूरकें त्रपुर मोरि आसअे
अनाथ नाथ देइ हाथ करि सनाथ दास अे ॥४२॥

कमठ हठ्ठ गंजनो कुकर्म मर्म भंजनो
जगज्जनातिरंजनो मद द्रुम प्रभंजनो
कुमत्ति मत्ति मंजनो, नयन्न युग्म खंजनो
जगत्रअे अगंजनो सो जयो पार्श्व निरंजनो ॥४३॥

गाहा

पास एह निज दासनी, अवधारो सरदास
नयणे देखाडि दरिस, पूरो पूरण आस ॥४४॥

चकवा चाहे चित्तस्युं, दिनकर दरिसण देव
चतुर चकोरी चंद जिम, हुं चाहुं नितमेव ॥४५॥

निस भरी सूतां नींदमें, दीठूं दरिसण आज
परतिख देखाडी दरिस, सफल करो मुज काज ॥४६॥

तुम्ह दरिसण सुखसंपदा, तुम्ह दरिसण नवनिधि
तुम्ह दरिसणथी पामिइं, सकल मनोरथ सिद्धि ॥४७॥

छंद चालि

अंतरीक प्रभु अंतरयामि, दीजे दरिसण शिवगति पामी
गुण केता कहिइं तुम्हं स्वामि, कहतां सरसती पार न पामी ॥४८॥

कीधो छंद मंद मति सार, हित करि चितमां धर्यो वारू
बालक जदवातदवा बोले, मातानें मनि अमृत तोले ॥४९॥

किधुं कवित चितने उल्लासें, सांभलतां सवि आपद नासे
संपद सघली आवे पासे, भावविजय भगतें इम भासे ॥५०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद छप्पय

कियो छंद आनंद, वृंद मनमांहि आणी
सांभलतां सुखकंद, चंद जिम सीतल वाणी
श्री विजयदेव गुरुराज आज तस गणधर गाजे
श्री विजयप्रभसूरि नाम काम समरूप विराजे
गणधर दोय प्रणमी करी, थुण्यो पास असरणसरण
भावविजय वाचक भणे, जयो देव जय जयकरण ॥५१॥

इतिश्री अंतरीक पार्श्वनाथ छंद सदानंद संपूर्णम्

संवत् १७५० सा वर्षे मार्गसिर वदि १४ शुभवासरे लिखितोयं पं. भाग्यविजयगणिना सकलमुनिमंडलीमुख्यमुनिश्रीप्रेमविजयवाचनाय श्रीपत्तन-महानगरे ॥

अघरा शब्दोना अर्थ

कडी : १ पुरिसादाणी =पुरुषोमां प्रधान, प्रसिद्ध, आप्त पुरुष, आदरणीय
खांणि = भंडार
कडी : २ धर = पृथ्वी
कडी : ६ वयरागर = हीरो, रत्नविशेष, हीरानी खाण
कडी : ७ सायक = बाण
कडी : ८ सुरमहिला = देवी, बहुला = धणी
कडी : ९ अवदात = वृत्तान्त, चरित्र, गुण, यश, यशस्वी वृत्तांत
कडी : ११ जिके = (तेना), जे
कडी : १२ चामीकर = सुंदर
कडी : १३ प्रवहण = वहाण , भज्जे - भांगे
कडी : १४ झडफे = ?
दंदोल = संशय / मूंझवण / तोफान / धांधल / कोलाहल
कडी : १५ जीह = जीभ, अहि = साप
विसराल = गुम थवुं / अदृश्य थवुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडी : १७ अबीह = निर्भय
कडी : २० निपट = तद्दन / घणा
धोटा = पुत्र
कडी : २४ केता = केटला
कडी : ३३ सीझे = सिद्ध करे / पूरे
कडी : ३५ सिंधुर = हाथी
कडी : ३६ पाखरिआ = शणगारेला
कडी : ३९ अमंद = तजस्वी
थें = तमे
कडी : ४३ गंजनो = गंजन / चूरो करनार
अगंजनो = अपराजित / गांजी शके नहि तेवो
खंजनो = चपळ
कडी : ४६ परतिख = प्रत्यक्ष
कडी : ४९ जदवातदवा = जेम तेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org